चाँद

गर्मी की रात रही ,साबिर और सना अपने अम्मी औ अब्बू के साथ अटरिया पै बैठ रहे .आसमान मा चाँद देखाई परा .गोल गोल थरिया की तिना .साबिर बहुत खुस भवा
ऊ सना से कहिस ''देखव दीदी चाँद कैसे चमकत है !हुआं को रहत होई ?सना बोली "अबहीं तक चाँद पर जिये की खत्तिर जरूरी हवा ,पानी,खाना नहीं मिल पावा है ई मारे हुआं कोई नहीं रहत है
हुइ सकत है कब्बौ यू हुइ जाय "
साबिर अपनी अम्मी से कहिस "चाँद के बारे मा कुछ और बताऊ अम्मी "
अम्मी बोलीं "चाँद हमरी भुइयां के चौगिरदा चक्कर मारत है ,भुईयां से कुछ आदमी रॉकेट मा बैठि कै चाँद पर गये रहे , हुआं अंट कै उई खुसी से उलरे तौ खूब ऊंचे उलरि गे .चाँद पर बड़ी बड़ी चट्टान औ गढ़हा हैं .उई लोग हुआं से माटी औ पाथर कै नमूना भुईयां पै लै आये .
साबिर पूंछिस "चाँद पर एतनी चमक कहाँ से आवत है ?
अब्बू बताईन "चाँद का सुर्ज से उजेर मिलत है .हमरी भुईयां का सुर्ज से उजेर मिलत है .
साबिर पूंछिस "सुर्ज का को उजेर देत है ?"
सुर्ज एक तारा है .तारा कै आपन उजेर होत है .आसमान मा जऊन तारा टिमटिमाय रहे हैं उइ सब हमरे सुर्ज की तिना हैं ,ऊमा से कुछ तौ सुर्ज से बड़े हैं ,ई हमसे बहुत दूर हैं ई मारे छोट छोट देखाई परत हैं "अब्बू कहिन
अम्मी कहिन "अगले महिना ईद है तब तुमका चाँद की कहानी सुनायिब "

छत –अटरिया **बताईये** –बताऊ
थाली -थरिया **चारों ओर** –चौगि रदा

तरह –तिना **उछले** –उलरे
लिए –खत्तिर **गड्ढा** - गढ़हा
इसलिए –ई मारे **मिटटी** –माटी
पृथ्वी –भुईयां **पत्थर** –पाथर
सूरज –सुर्ज **उजाला** –उजेर
तरह –तिना **सुनाऊंगी** –सुनायिब

अभ्यास

- चंदा पै कोई काहे नही रहत है ?
- हमरी भुईयां औ चंदा मामा कया उजेर कहां से मिलत है ?
- रोज रात मा चंदा मामा का देखौ कया तुमका रोज चंदा एकै तिना देखात है ?
- अगर सूरज ना होत तौ का होत
- चंदा मामा कौनी रात का पूरे पूरे निकरत हैं ?

- चंदा मामा कौनी रात का बिलकुल नहीं देखात हैं ?